Dr. Binay Kumar
Assistant Professor
Psychology Dept.
U.R. College Rosera

B.A. Psy (Hon)
B. Part I
General Psychology

Cannon-Bard Theory or Hypothalamic Theory

इस सिद्धांत का प्रतिपादन कैनन-1927 तथा बार्ड-1934 में किया। इसलिए इस सिद्धांत को कैननबार्ड सिद्धांत कहा जाता है। इस सिद्धांत को हाइपोथैलमस का भी सिद्धांत कहा जाता है।

यह सिद्धांत जेम्स लांजे सिद्धांत से भिन्न है। पहली बात यह है कि इस सिद्धांत के अनुसार, संवेगात्मक अनुभव शारीरिक परिवर्तनों पर निर्भर नहीं करता। दूसरी बात, संवेग का केन्द्र हाइपोथैलेमस है। जिसका स्थान केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र के भाग (प्रधान मस्तिष्क) में थैलमिक तथा थैलमस के नीचे है। संवेग में हाइपोथैलमस तथा थैलमस के महत्व के कारण ही इसका नाम हाइपोथैलेमस रखा गया। इसे केन्द्रीय सिद्धांत भी कहा जाता है क्योंकि इसमें केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र का अधिक महत्व होता है।

इस सिद्धांत के अनुसार संवेग उत्पन्न करनेवाली उद्दीपक ग्राहक या ज्ञानेन्द्रिय को जब उत्तेजित करता है तब उसमें तंत्रिका प्रवाह उत्पन्न होता है। जो

प्रमस्तिष्क पर पहुँचता है।
प्रमस्तिष्क में आने के पहले आवेग
प्रवाह हाइपोथैलेमस होकर गुजरते हैं।
इससे हाइपोथैलेमस थोड़ा क्रियाशील हो
उठता है। चूंकि इस पर प्रमस्तिष्क
का नियंत्रण रहता है। किन्तु यह कभी
इस अवस्था में पूर्णतः क्रियाशील
नहीं हो पाता है।
इस सिद्धांत के अनुसार किसी संवेगात्मक
परिस्थिति या उद्दीपक को ग्रहण कर
थैलेमस विशेष उत्तेजित हो जाता है तथा
वहाँ तंत्रिका आवेग उत्पन्न होता है।
यह आवेग निचली तंत्रिकाओं के समीप
सहारे प्रमस्तिष्क तक आने की राह में
हाइपोथैलेमस से होकर गुजरती है।
परिणामतः हाइपोथैलेमस क्रियाशील हो
जाता है और वहाँ से एक ही साथ
तंत्रिका-आवेग दो ओर चलते हैं- एक
परिधिगत प्रमस्तिष्क की ओर दूसरा
अन्तःस्रावी या आन्तरिक अंगों तथा
पेशियों की ओर। जो आवेग
प्रमस्तिष्क में पहुँचता है वह संवेग की
अनुभव उत्पन्न करता है और जो
आन्तरिक अंगों और पेशियों में जाता है
वह तरह तरह के शारीरिक

(3)

आंगिक परिवर्तनों को उत्पन्न करता है। इस तरह संवेगात्मक अनुभव और आंगिक परिवर्तन एक साथ ही उत्पन्न होते हैं। दोनों हाइपोथैलेमस की क्रियाशीलता पर निर्भर करता है। आलोचना

इस सिद्धांत के अनुसार, चूँकि संवेगात्मक अनुभव आंगिक-परिवर्तनों पर निर्भर नहीं करता, इसलिए एक ही संवेग में कई तरह के आंगिक परिवर्तन हो सकते हैं अथवा एक ही तरह के आंगिक परिवर्तन कई तरह के संवेगों में हो सकते हैं।

हाइपोथैलेमस सिद्धांत के अनुसार संवेग का अनुभव हाइपोथैलेमस से थैलेमस में स्नायुप्रवाह के आने पर निर्भर करता, आंगिक परिवर्तनों पर नहीं। चूँकि शेरिंगटन की रिसर्च हाइपोथैलेमस पर ऐसा असर नहीं डालती कि वह थैलेमस को तंत्रिका-आवेग भेजे। इसलिए संवेग का अनुभव नहीं होता।

जेम्स लांजे सिद्धांत के अनुसार जब गर्दन के पास की तंत्रिका को काटकर शरीर के आंतरिक भागों से आनेवाले तंत्रिका आवेग को मस्तिष्क में आने से रोक दिया जाता है, तब भी संवेग का अनुभव क्यों होता है। इस सिद्धांत के अनुसार ... तंत्रिकाओं का काटने पर

मे हाइपोथैलेमस और थैलेमस के बीच में तंत्रिका संबंध है, वह ज्यों का त्यों बना रह जाता है। अतः संवेग के अनुभव पर तंत्रिकाओं के कटने का घातक असर नहीं पड़ता और संवेग का अनुभव होता रह जाता है।

आलोचना — हाइपोथैलेमस-सिद्धांत हाइपोथैलेमस को ही संवेग का केन्द्र मानता है। अर्थात सभी तरह के संवेग हाइपोथैलेमस की क्रियाशीलता पर निर्भर करते हैं। लेकिन, लैंडिस और हंट के प्रयोगों में जब केवल हाइपोथैलेमस को उत्तेजित किया तो उससे विभिन्न तरह के शारीरिक परिवर्तन तो हुए पर संवेग का वास्तविक अनुभव नहीं हुआ। ये शारीरिक परिवर्तन अधिक तीव्र और क्षणिक थे तथा अन्य समायोजन की क्षमता भी कम थी। अतः कह सकते हैं कि हम जिन संवेगों का अनुभव अपने दैनिक जीवन में करते हैं, वह हाइपोथैलेमस के क्रियाशील करने पर उत्पन्न संवेग या संवेगात्मक व्यवहार से भिन्न होते हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस

है कि यह संवेग की व्याख्या केवल जैविक आधार पर करता है तथा संवेग की उत्पत्ति और विकास में चेतना तथा अभिप्रेरणा का महत्व स्पष्ट नहीं करता।

यह सिद्धान्त यह नहीं बता पाता कि संवेगात्मक अनुभूति की उत्पत्ति में हाइपोथैलेमस का इतना महत्वपूर्ण स्थान क्यों दिया जाता है। स्वयं ये दोनों शरीर-क्रियाविज्ञानी भी थैलेमस/हाइपोथैलेमस के इस महत्व को सिद्ध करने के लिए किसी प्रकार का उपयुक्त प्रमाण देने में असमर्थ रहे हैं।

इन आलोचनाओं के बावजूद भी कैनन-बार्ड का सिद्धान्त आज एक प्रमुख सिद्धान्त है, क्योंकि इस सिद्धान्त के अनुसार हाइपोथैलेमस तथा थैलेमस संवेग का उद्गम बिन्दु है जो अधिकतर मनोवैज्ञानिकों को मान्य है।

END